MAA OMWATI INTERNATIONAL

EDUCATION CITY

V.P.O. Hassanpur, Teh. HodalDistt.Palwal

(HR.)

FOREIGN POLICY OF INDIA

MA-3RDSEM (POL.SCIENCE)

COURSE CODE – 21POL23DC3

SYLLABUS

MAHARISHI DAYANAND UNIVERSITY, ROHTAK

POLITICAL SCIENCE

FOREIGN POLICY OF INDIA-I

M.A. 2nd Year (Semester–3) : Paper–5

PAPER CODE : 21POL23DC3

Time : Three Hours ***Maximum Marks : 100***

Theory : 80, Assignment : 20

Note : *The question paper will be divided into five Units carrying equal marks i.e. 16 marks of such question. Each of first four units will contain two questions and the students shall be asked to attempt one question from each unit. Unit five shall contain eight short answer type questions without any internal choice and it shall be covering the entire syllabus. As such, all questions in unit five shall be compulsory internal choice and it shall be covering the entire syllabus. As such, all questions in unit five shall be compulsory.*

Unit-I Meaning of Foreign Policy : History, Principles, Objectives and Determinants of India's Foreign Policy.

Unit-II (i) Formative Phase :
- (a) Legacies of the freedom struggle
- (b) Domestic background
- (c) Nehru's perspective, Critical analysis
- (d) International situation

(ii) Process of Foreign Policy making in India

Unit-III Non-alignment meaning, Features Bases and Role of India in the Non-alignment movement : Indian and third world.

Unit-IV India's Secutiry Environment and India's Foreign Policy :
- (a) Domestic environment
- (b) Regional environment
- (c) International environment
- (d) India and United Nation (UN)

□

Unit-1

Foreign policyकाहिंदीमेंअर्थहोताहै"**विदेशनीति**"।यहएकदेशद्वाराअपनेअंतरराष्ट्रीयसंबंधोंऔरबाहरीदेशोंकेसाथअपनेउद्देश्योंकोप्राप्तकरनेकेलिएबनाईगईरणनीतियाँऔरनिर्णयहोतेहैं।विदेशनीतिमेंएकदेशअपनीकूटनीतिक, आर्थिक, औरसुरक्षासंबंधीनीतियोंकोतयकरताहै,
ताकिवहअपनीराष्ट्रीयहितोंकीरक्षाकरसकेऔरवैश्विकमंचपरअपनीस्थितिमजबूतकरसके।

विदेशनीतिकाइतिहास (History of Foreign Policy)
कामतलबहैकिसीदेशकेअंतरराष्ट्रीयसंबंधोंऔरकूटनीतिकेक्षेत्रमेंकिएगएनिर्णयोंऔरघटनाओंकाइतिहास।हरदेशकीविदेशनीतिउसकेराष्ट्रीयहितों, सुरक्षा,
औरवैश्विकप्रभावकेउद्देश्यसेनिर्धारितहोतीहै।यहनकेवलअंतरराष्ट्रीयसंबंधोंकेबारेमेंहै,
बल्किइसमेंउसदेशकीअंतर्राष्ट्रीयराजनीति, व्यापार, रक्षा, औरसांस्कृतिकआदान-प्रदानकीरणनीतियाँभीशामिलहोतीहैं।

भारतकीविदेशनीतिकाइतिहास

भारतकीविदेशनीतिकाइतिहासप्राचीनकालसेलेकरआधुनिकसमयतकबहुतहीविविधऔरमहत्वपूर्णरहाहै।यहांकुछमहत्वपूर्णचरणोंपरचर्चाकीजारहीहै:

1. **प्राचीनकाल (Ancient Period)**:
   प्राचीनभारतीयसभ्यताओंजैसेमोहनजोदड़ोऔरहड़प्पाकीसभ्यताकेसमयविदेशनीतिकाएकरूपथा, जोव्यापारऔरसांस्कृतिकआदान-प्रदानपरआधारितथा।चीन, मिस्त्र,
   औरमेसोपोटामियाजैसीसभ्यताओंसेव्यापारिकसंबंधथे।
2. **मौर्यऔरगुप्तसाम्राज्य (Maurya and Gupta Empires)**: मौर्यसाम्राज्यकेसमय,
   सम्राटअशोकनेविदेशनीतिमेंअहिंसाऔरशांतिकेसिद्धांतकोलागूकिया।उनकाउद्देश्यथाकिभारतशांतिपूर्णतरीकोंसेअपनीताकतकोबढ़ाएऔरअन्यदेशोंसेमैत्रीपूर्णसंबंधबनाए।गुप्तसाम्राज्यकेसमय, भारतकाव्यापार, कलाऔरसंस्कृतिदुनियाकेविभिन्नहिस्सोंमेंफैलगया।
3. **मध्यकाल (Medieval Period)**:
   मध्यकालमेंभारतीयउपमहाद्वीपपरविभिन्नमुस्लिमसाम्राज्योंकाप्रभुत्वथा।इनसाम्राज्योंनेविदेशनीतिमेंसंघर्षऔरकूटनीतिकाअधिकप्रयोगकिया।दिल्लीसल्तनतऔरमुघलसाम्राज्यनेविभिन्नदेशोंकेसाथयुद्धऔरसंधियाँकीं।

4. **ब्रिटिशकाल (British Colonial Period)**:
   ब्रिटिशसाम्राज्यकेसमयभारतकीविदेशनीतिब्रिटेनकेअधीनथी।ब्रिटिशसरकारनेभारतकेमाध्यमसेउपनिवेशोंमेंअपनेव्यापारिकऔरसामरिकहितोंकोबढ़ाया।भारतीयविदेशनीतिपूरीतरहसेब्रिटिशसाम्राज्यकीसामरिकऔरव्यापारिकयोजनाओंकेअनुसारथी।
5. **स्वतंत्रताकेबाद (Post-Independence)**: 15 अगस्त1947 कोभारतकीस्वतंत्रताकेबाद, भारतकीविदेशनीतिकोमहात्मागांधीकेआदर्शोंऔरजवाहरलालनेहरूकेदृष्टिकोणकेआधारपरपुनर्निर्मितकियागया।जवाहरलालनेहरूने"**गांधीवादीअहिंसा**"और"**सार्वभौमिकता**"कोविदेशनीतिकाहिस्साबनाया।नेहरूनेशांतिऔरशांतिपूर्णसह-अस्तित्वकीअवधारणाकोबढ़ावादियाऔरभारतको**गुटनिरपेक्षआंदोलन** (Non-Aligned Movement) कासदस्यबनानेमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभाई।
6. **समकालीनदौर (Contemporary Period)**: 1990 केदशकमें**भारतकेआर्थिकउदारीकरण**केबाद, भारतकीविदेशनीतिमेंबदलावआया।व्यापारिकऔरआर्थिकसंबंधोंकोप्राथमिकतादीगई, औरभारतनेपश्चिमीदेशों, जैसेअमेरिकाऔरयूरोपीयसंघ, केसाथअपनेसंबंधोंकोमजबूतकिया।साथही, एशिया, अफ्रीकाऔरलैटिनअमेरिकाकेदेशोंकेसाथभीभारतनेअपनेरिश्तोंकोबढ़ाया।

   21वींसदीमें, भारतकीविदेशनीतिमेंसुरक्षा, आतंकवाद, पर्यावरण, औरवैश्विकऊर्जासुरक्षाजैसेमुद्दोंपरध्यानकेंद्रितकियागयाहै।साथही, भारतने**संयुक्तराष्ट्र**और**ब्रिक्स**जैसेअंतरराष्ट्रीयसंगठनोंमेंअपनीभूमिकाकोभीमजबूतकिया।

विदेशनीतिकेसिद्धांत (Principles of Foreign Policy)वेमूलविचारऔरदिशाएँहोतीहैं, जिनकेआधारपरएकदेशअपनीविदेशनीतिकोतैयारकरताहै।येसिद्धांतराष्ट्रीयहितों, सुरक्षा, औरअंतरराष्ट्रीयसंबंधोंकोध्यानमेंरखतेहुएनिर्धारितकिएजातेहैं।भारतकीविदेशनीतिकेप्रमुखसिद्धांतनिम्नलिखितहैं:

1. गांधीवादीअहिंसा (Gandhian Non-Violence)

महात्मागांधीकेआदर्शोंकेअनुसार, भारतकीविदेशनीतिअहिंसाऔरशांतिपरआधारितरहीहै।गांधीजीकामाननाथाकियुद्धऔरसंघर्षसेकोईसमस्याहलनहींहोसकती, औरहमेंशांति, सह-अस्तित्वऔरसहकारिताकेमाध्यमसेअपनेअंतरराष्ट्रीयसंबंधोंकोबेहतरबनानाचाहिए।

2. सार्वभौमिकता (Universalism)

भारतकीविदेशनीतिसार्वभौमिकदृष्टिकोणपरआधारितहै,
जिसकामतलबहैकिभारतीयनीतिनकेवलभारतीयहितोंकोध्यानमेंरखतीहै,
बल्किदुनियाकेसभीदेशोंकेहितोंकाभीसम्मानकरतीहै।भारतवैश्विकशांति, मानवाधिकार,
औरसमानताकेसिद्धांतोंकापालनकरताहै।

3. गुटनिरपेक्षता (Non-Alignment)

गुटनिरपेक्षआंदोलन (Non-Aligned Movement - NAM)केसिद्धांतकेअनुसार, भारतनेकिसीभीब्लॉक (पश्चिमीयासोवियत) सेजुड़नेसेइनकारकिया।भारतनेस्वतंत्रऔरआत्मनिर्भरविदेशनीतिअपनाई,
जोनतोकिसीकेपक्षमेंथीऔरनहीविरोधमें।यहसिद्धांतविशेषरूपसे1950 और1960 केदशकोंमेंमहत्वपूर्णथा।

4. शांतिपूर्णसह-अस्तित्व (Peaceful Coexistence)

भारतकीविदेशनीतिकाएकप्रमुखसिद्धांत"**शांतिपूर्णसह-अस्तित्व**"है।इसकाअर्थहैकिदेशोंकोएक-दूसरेकेअस्तित्वऔरउनकेआंतरिकमामलोंकासम्मानकरनाचाहिए।यहसिद्धांतविशेषरूपसेभारतऔरउसकेपड़ोसीदेशोंकेसाथसंबंधोंमेंमहत्वपूर्णरहाहै।

5. समानताऔरन्याय (Equality and Justice)

भारतकायहसिद्धांतहैकिसभीदेशोंकोसमानअधिकारमिलनाचाहिएऔरवैश्विकमुद्दोंपरनिर्णयलेतेसमय न्यायकापालनकियाजानाचाहिए।भारतहमेशाअंतरराष्ट्रीयमंचोंपरछोटेऔरविकासशीलदेशोंकेपक्षमेंखड़ारहा हैऔरउनकासमर्थनकियाहै।

6. विकसितदेशोंकेसाथसहयोग (Cooperation with Developed Countries)

भारतकीविदेशनीतिमेंविकसितदेशोंकेसाथसहयोगऔरसाझेदारीकोमहत्वपूर्णमानागयाहै।व्यापार, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, औरऊर्जाकेक्षेत्रमेंइनदेशोंकेसाथसहयोगभारतकीविकासप्रक्रियाकाअहमहिस्साबनचुकाहै।

7. सुरक्षाऔररक्षानीति (Security and Defense Policy)

भारतकीविदेशनीतिमेंराष्ट्रीयसुरक्षाऔररक्षाएकअहमस्थानरखतेहैं।यहसिद्धांतभारतकीक्षेत्रीयसुरक्षाऔर आतंकवादकेखिलाफकड़ीकार्रवाईकोध्यानमेंरखतेहुएतैयारकियागयाहै।भारतनेअपनेरक्षाबलोंकोमजबूतकि याहैऔरक्षेत्रीयशांतिकेलिएअपनीजिम्मेदारीनिभाईहै।

8. आर्थिकसहयोग (Economic Cooperation)

भारतकीविदेशनीतिमेंआर्थिकसंबंधोंकोबढ़ावादेनाऔरव्यापारिकसाझेदारीकोबढ़ानाभीएकप्रमुखसिद्धांतहै। भारतनेविभिन्नदेशोंकेसाथमुक्तव्यापारसमझौतों (Free Trade Agreements) औरआर्थिकसहयोगबढ़ानेकेलिएकईपहलकीहैं।

9. संयुक्तराष्ट्रऔरअंतरराष्ट्रीयसंस्थाओंमेंसक्रियभागीदारी (Active Participation in UN and International Institutions)

भारतकीविदेशनीतिकाएकमहत्वपूर्णसिद्धांत**संयुक्तराष्ट्र (UN)**औरअन्यअंतरराष्ट्रीयसंस्थाओंमेंसक्रियभागीदारीहै।भारतकाउद्देश्यवैश्विकशांति, सुरक्षा, औरविकासकेलिएइनसंस्थाओंकामजबूतसमर्थनकरनाहै।भारतनेसुरक्षापरिषदमेंस्थायीसदस्यताकेलिएभी प्रयासकिएहैं।

10. आत्मनिर्भरता (Self-Reliance)

भारतकीविदेशनीतिमेंआत्मनिर्भरताएकमहत्वपूर्णसिद्धांतहै, जिसकामतलबहैकिभारतअपनीजरूरतोंकोखुदपूराकरनेमेंसक्षमहो, बजायइसकेकिवहदूसरेदेशोंपरनिर्भररहे।यहसिद्धांतखासकर1990 केदशकमेंभारतकेआर्थिकसुधारोंऔरस्वतंत्रकूटनीतिकपहलकेसमयमहत्वपूर्णथा।

भारतकीविदेशनीतिकेउद्देश्यऔरनिर्धारण (Objectives and Determinants of India's Foreign Policy)
भारतकीविदेशनीतिकेआधारपरकईप्रमुखउद्देश्यऔरकारकहोतेहैं, जोइसेदिशाऔरआकारप्रदानकरतेहैं।इनउद्देश्योंऔरनिर्धारणोंकोसमझनामहत्वपूर्णहै, क्योंकिवेभारतकेअंतरराष्ट्रीयसंबंधों, कूटनीतिकनिर्णयोंऔरवैश्विकमंचपरउसकीभूमिकाकोप्रभावितकरतेहैं।

भारतकीविदेशनीतिकेउद्देश्य (Objectives of India's Foreign Policy)

1. **राष्ट्रीयसुरक्षाकासंरक्षण (Protection of National Security)**
   भारतकीविदेशनीतिकासबसेमहत्वपूर्णउद्देश्यराष्ट्रीयसुरक्षाकासंरक्षणकरनाहै।इसकेतहतभारतअपनेसुरक्षाहितोंकीरक्षाकरनेकेलिएकूटनीतिकऔरसामरिकउपायोंकोअपनाताहै।यहपाकिस्तानऔर चीनजैसेदेशोंकेसाथसुरक्षासंबंधोंपरविशेषध्यानकेंद्रितकरताहै।
2. **आर्थिकविकासऔरसमृद्धि (Economic Development and Prosperity)**
   विदेशनीतिकाएकप्रमुखउद्देश्यभारतकेआर्थिकविकासकोबढ़ावादेनाहै।इसकेलिएभारतव्यापार, निवेश, तकनीकीसहयोग,

औरअंतरराष्ट्रीयसाझेदारीकोबढ़ावादेताहै।यहवैश्विकबाजारोंमेंअपनीउपस्थितिबढ़ाने, विदेशीनिवेशआकर्षितकरनेऔरप्रौद्योगिकीहस्तांतरणकोसुनिश्चितकरनेपरकेंद्रितहोताहै।

3. **सार्वभौमिकताऔरशांति (Universalism and Peace)**
   भारतकीविदेशनीतिकाउद्देश्यवैश्विकशांति, सौहार्द्रऔरसहयोगकोबढ़ावादेनाहै।भारतनेहमेशाशांतिऔरसंघर्षकेबजायसंवादऔरकूटनीतिकेमाध्यमसेसमस्याओंकाहलखोजनेकाप्रयासकियाहै।गुटनिरपेक्षआंदोलन (Non-Aligned Movement) औरशांतिपूर्णसह-अस्तित्वकीनीतिइसकेउदाहरणहैं।
4. **वैश्विककूटनीतिकप्रभावबढ़ाना (Enhancing Global Diplomatic Influence)**
   भारतकाउद्देश्यअंतरराष्ट्रीयमंचोंपरअपनीकूटनीतिकऔररणनीतिकस्थितिकोमजबूतकरनाहै।इसमेंसंयुक्तराष्ट्र, ब्रिक्स, औरअन्यअंतरराष्ट्रीयसंगठनोंमेंसक्रियभागीदारीशामिलहै।भारतनेसुरक्षापरिषदमेंस्थायीसदस्यताकीदिशामेंभीप्रयासकिएहैं।
5. **विकासशीलदेशोंकासमर्थन (Support for Developing Countries)**
   भारतकीविदेशनीतिविकासशीलदेशोंकेप्रतिअपनीजिम्मेदारीकोभीदर्शातीहै।भारतहमेशासेवैश्विकदक्षिण (Global South) केदेशोंकेसमर्थनमेंखड़ारहाहैऔरउनकेलिएवैश्विकमंचपरआवाजउठाईहै।इसकेतहतविकासशीलदेशोंकेसाथआर्थिक, तकनीकीऔरमानवीयसहायताबढ़ानेकाप्रयासकियाजाताहै।
6. **प्राकृतिकसंसाधनोंऔरऊर्जासुरक्षा (Natural Resources and Energy Security)**
   ऊर्जासंसाधनोंकीसुरक्षाऔरआपूर्तिसुनिश्चितकरनाभीभारतकेविदेशनीतिकाएकप्रमुखउद्देश्यहै।इसकेलिएभारतअपनेऊर्जासाझेदारोंकेसाथमजबूतसहयोगस्थापितकरताहै, जैसेकिमध्य-पूर्वदेशों, रूसऔरअन्यऊर्जाउत्पादकदेशोंकेसाथ।

भारतकीविदेशनीतिकेनिर्धारण (Determinants of India's Foreign Policy)

भारतकीविदेशनीतिकोप्रभावितकरनेवालेकईप्रमुखनिर्धारणहोतेहैं।येनिर्धारणभारतकेऐतिहासिकअनुभवों, भौगोलिकस्थिति, आर्थिकस्थिति, राजनीतिकदृष्टिकोणऔरसामाजिकपहलुओंसेजुड़ेहोतेहैं।प्रमुखनिर्धारणइसप्रकारहैं:

1. **भौगोलिकस्थिति (Geographical Location)**
   भारतकीभौगोलिकस्थितिउसकेविदेशनीतिकाएकमहत्वपूर्णनिर्धारणहै।भारतदक्षिणएशियामेंस्थि

तहै, जहांउसकेपड़ोसीदेशोंकेसाथजटिलराजनीतिकऔरसुरक्षासंबंधहैं।इसकेअलावा, भारतहिंदमहासागरक्षेत्रमेंस्थितहै, जोवैश्विकव्यापारऔरसुरक्षाकेलिहाजसेमहत्वपूर्णहै।

2. **राष्ट्रीयसुरक्षा (National Security)**
   भारतकीराष्ट्रीयसुरक्षाविदेशनीतिकासबसेमहत्वपूर्णनिर्धारणहै।पाकिस्तानऔरचीनजैसेपड़ोसीदेशोंकेसाथसंघर्षोंऔरविवादोंकेकारण, भारतकीविदेशनीतिमेंसुरक्षासंबंधोंपरविशेषध्यानदियाजाताहै।इसकेलिएभारतअपनीरक्षाक्षमताको बढ़ाने, कूटनीतिकगठबंधनबनाने, औरआतंकवादविरोधीउपायोंकोप्रोत्साहितकरताहै।
3. **आर्थिकस्थिति (Economic Status)**
   भारतकीआर्थिकस्थितिभीउसकीविदेशनीतिकोप्रभावितकरतीहै।आर्थिकविकासऔरसमृद्धिकेलिए भारतवैश्विकबाजारोंमेंअपनीउपस्थितिबढ़ानाचाहताहैऔरविभिन्नदेशोंकेसाथव्यापारिकसंबंधोंको मजबूतकरताहै।भारतकेआर्थिकसुधारऔरवैश्वीकरणकेकारणविदेशनीतिमेंभीबदलावआयाहै।
4. **राजनीतिकदृष्टिकोण (Political Ideology)**
   भारतीयनेतृत्वकीराजनीतिकविचारधाराऔरकूटनीतिकदृष्टिकोणभीविदेशनीतिकोप्रभावितकरतेहैं ।उदाहरणकेलिए, नेहरूवादीकालमेंभारतनेगुटनिरपेक्षआंदोलनकोबढ़ावादिया, जबकिवर्तमानमेंभारतअपनीविदेशनीतिमेंअधिकप्रौद्योगिकीऔरव्यापारिकदृष्टिकोणअपनाताहै।
5. **संविधानऔरआंतरिकराजनीति (Constitution and Domestic Politics)**
   भारतकासंविधानऔरउसकीआंतरिकराजनीतिकस्थितिभीविदेशनीतिकोप्रभावितकरतीहै।आंतरिकअसंतोष, राजनीतिकस्थिरता, औरसार्वजनिकरायविदेशनीतिकेनिर्धारणमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभातेहैं।
6. **वैश्विकऔरक्षेत्रीयघटनाएँ (Global and Regional Events)**
   वैश्विकऔरक्षेत्रीयघटनाएँभीभारतकीविदेशनीतिकोप्रभावितकरतीहैं।उदाहरणकेलिए, शीतयुद्ध, आतंकवाद, जलवायुपरिवर्तन, औरवैश्विकमहामारीजैसेमुद्देभारतकीकूटनीतिऔरनिर्णयोंकोप्रभावितकरतेहैं।
7. **सांस्कृतिकऔरऐतिहासिकपहलू (Cultural and Historical Factors)**
   भारतकासांस्कृतिकऔरऐतिहासिकधरोहरभीउसकीविदेशनीतिकोप्रभावितकरताहै।भारतकागांधीवादीसिद्धांत, भारतीयसंस्कृतिकीवैश्विकपहचान, औरऐतिहासिकसंबंधजैसेकारकविदेशनीतिकेनिर्धारणमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभातेहैं।

Unit-2

स्वतंत्रतासंग्रामकीधरोहरेंभारतीयसमाजऔरराजनीतिमेंगहरीपैठबनाएहुएहैं।यहसंघर्षकेवलब्रिटिशसाम्राज्यसेमुक्तिकाप्रयासनहींथा, बल्कियहभारतीयसंस्कृति,

अस्मिताऔरस्वाभिमानकेपुनर्निर्माणकाप्रतीकभीथा।स्वतंत्रतासंग्रामकीकुछमहत्वपूर्णधरोहरेंनिम्नलिखितहैं:

1. **राष्ट्रवादीचेतना**:
   स्वतंत्रतासंग्रामनेभारतीयोंमेंएकनईराष्ट्रवादीचेतनाकाजन्मदिया।इससंघर्षनेभारतीयोंकोअपनेअधिकारोंऔरस्वाधीनताकीमहत्तासमझनेकेलिएप्रेरितकिया।यहचेतनाआजभीभारतीयसमाजमेंगहरीहै।
2. **संविधानऔरलोकतंत्रकीनींव**:
   स्वतंत्रतासंग्रामकेदौरानलोकतंत्रऔरगणराज्यकीअवधारणाकोमज़बूतीमिली।महात्मागांधी, नेहरू, सरदारपटेलजैसेनेताओंनेभारतीयसंविधानकेनिर्माणमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभाई।आज़ादीकेबाद1950 मेंभारतीयसंविधानकालागूहोना, स्वतंत्रतासंग्रामकीएकबड़ीधरोहरहै।
3. **सामाजिकऔरसांस्कृतिकउत्थान**:
   स्वतंत्रतासंग्राममेंकईऐसेनेताथेजिन्होंनेसमाजमेंव्याप्तअसमानता, जातिवादऔरधार्मिकभेदभावकोसमाप्तकरनेकाप्रयासकिया।आंबेडकर, गांधी, पंनेहरू, औरअन्यनेताओंनेसमाजमेंसमानताऔरभाईचारेकीभावनाकोबढ़ावादिया।
4. **सशस्त्रसंघर्षऔरअहिंसाकासिद्धांत**: स्वतंत्रतासंग्राममेंसशस्त्रसंघर्षकेसाथ-साथमहात्मागांधीनेअहिंसाकेसिद्धांतकोभीप्रोत्साहितकिया।यहसिद्धांतआजभीभारतकीविदेशनीतिऔरआंतरिकसंघर्षोंमेंप्रभावीरूपसेउपयोगकियाजाताहै।
5. **नारीसशक्तिकरण**: स्वतंत्रतासंग्रामकेदौरानमहिलाआंदोलनोंनेअपनीजगहबनाई।रानीदुर्गावती, सुभद्राकुमारीचौहान, सरोजिनीनायडू, कस्तूरबागांधीजैसीमहिलाएंसक्रियरूपसेआंदोलनमेंभागलींऔरमहिलाओंकेअधिकारोंकेलिएसंघर्षकिया।
6. **स्वतंत्रतासंग्रामकेनेताऔरउनकेविचार**:
   स्वतंत्रतासंग्रामकेदौरानकईमहाननेताओंनेभारतीयराजनीतिऔरसमाजकेबारेमेंमहत्वपूर्णविचारव्यक्तकिए।उनकेविचारोंऔरकार्योंनेभारतीयसमाजकोप्रेरणादीऔरआजभीउनकेविचारोंकाप्रभावहै।
7. **प्रकृतिऔरपर्यावरणसंरक्षण**: गांधीजीकेसत्याग्रहआंदोलनमें, विशेषकरचिपकोआंदोलनऔरपर्यावरणकेसंरक्षणकीभावनाउत्पन्नहुईथी।पर्यावरणीयजागरूकताऔरप्राकृतिकसंसाधनोंकेसंरक्षणकेविचारस्वतंत्रतासंग्रामकेविचारोंकाएकहिस्सारहेहैं।

स्वतंत्रतासंग्रामकीयेधरोहरेंभारतीयसमाजमेंगहरीछापछोड़चुकीहैंऔरआजभीहमेंअपनीसंस्कृति, समाजऔरलोकतंत्रकोमजबूतकरनेकीप्रेरणादेतीहैं।

विदेशनीतिकीघरेलूपृष्ठभूमि (Domestic Background of Foreign Policy)कातात्पर्यउसदेशकीआंतरिकपरिस्थितियोंऔरसमाजिक-राजनीतिकसंदर्भसेहै, जोउसकीविदेशनीतिकोआकारदेतीहैं।एकदेशकीघरेलूपृष्ठभूमि, जैसेउसकीराजनीतिकस्थिरता, अर्थव्यवस्था, समाजिकसंरचना, औरसुरक्षास्थिति, विदेशनीतिकोप्रभावितकरतीहैऔरउसेदिशाप्रदानकरतीहै।

यहांकुछप्रमुखतत्वदिएगएहैं, जोकिसीदेशकीविदेशनीतिकीघरेलूपृष्ठभूमिकोप्रभावितकरतेहैं:

1. राजनीतिकस्थिति:

किसीभीदेशकीआंतरिकराजनीतिकस्थितिविदेशनीतिकोप्रभावितकरतीहै।यदिदेशमेंराजनीतिकअस्थिरता यासंघर्षचलरहाहो, तोउसकीविदेशनीतिकोभीउससंकटयाअस्थिरतासेनिपटनेकेलिएरूपांतरितकियाजासकताहै।उदाहरणस्वरूप, अगरएकलोकतांत्रिकसरकारसत्तामेंहै, तोउसकीविदेशनीतिआमतौरपरनागरिकोंकेअधिकारोंऔरवैश्विकमानवाधिकारोंकेप्रतिसंवेदनशीलहोतीहै। वहीं, एकतानाशाहीसरकारकीविदेशनीतिअधिकराष्ट्रीयसुरक्षाऔरशक्तिकीओरकेंद्रितहोसकतीहै।

2. आर्थिकस्थिति:

एकदेशकीआर्थिकस्थितिउसकीविदेशनीतिकेनिर्धारणमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभातीहै।एकसमृद्धऔरविकसितदेशवैश्विकव्यापार, निवेश, औरविकासकार्योंमेंअग्रणीहोसकताहै, जबकिएकगरीबयाविकासशीलदेशअपनीविदेशनीतिकोआर्थिकसहायताप्राप्तकरने, संसाधनजुटानेऔरव्यापारिकरिश्तेसुधारनेपरकेंद्रितकरसकताहै।उदाहरणकेतौरपर, यदिकिसीदेशकीआर्थिकस्थितिकमजोरहै, तोवहअपनेपड़ोसीदेशोंसेव्यापारिकसमझौतोंयाअंतर्राष्ट्रीयसहायताकीओरदेखसकताहै।

3. सामाजिकसंरचना:

देशकीसामाजिकसंरचना, जैसेजाति, धर्म, औरसंस्कृतिभीविदेशनीतिपरअसरडालसकतीहै।उदाहरणकेतौरपर, अगरएकदेशमेंबहुसंख्यकसमुदायकाप्रभुत्वहै, तोविदेशनीतिमेंउससमुदायकीप्राथमिकताओंकोमहत्वमिलसकताहै।साथही, किसीधार्मिकयासांस्कृतिकगठबंधनकीभावनाभीविदेशनीतिकोप्रभावितकरसकतीहै।

4. सुरक्षाऔरसामरिकहित:

राष्ट्रीयसुरक्षाऔरसामरिकजरूरतेंभीकिसीदेशकीविदेशनीतिकोप्रभावितकरतीहैं।यदिकिसीदेशकोबाहरीआक्रमणयाआतंकवादकाखतरामहसूसहोताहै,
तोउसकीविदेशनीतिकाप्रमुखउद्देश्यसुरक्षागठबंधनोंऔरसैन्यसहयोगकोबढ़ावादेनाहोसकताहै।इसकेअलावा, सैन्यशक्तिबढ़ानेयासैन्यअनुबंधोंकोमजबूतकरनेकीदिशामेंभीकदमउठाएजासकतेहैं।

5. जनमतऔरसार्वजनिकराय:

किसीदेशकीजनसंख्याकीसोचऔरविचारभीविदेशनीतिकोप्रभावितकरतीहै।अगरनागरिकोंकेबीचअंतर्राष्ट्रीयमामलोंपरएकनिश्चितरायबनतीहै,
तोसरकारउसेध्यानमेंरखतेहुएअपनीविदेशनीतिकोनिर्धारितकरतीहै।जैसे,
यदिदेशकीजनताअंतर्राष्ट्रीयसंबंधोंमेंशांतिचाहतीहै,
तोसरकारभीकूटनीतिकप्रयासोंमेंशांतिऔरसंवादकोप्राथमिकतादेसकतीहै।

6. संवैधानिकऔरकानूनीढांचा:

विदेशनीतिकेनिर्माणमेंदेशकेसंविधानऔरकानूनीढांचेकाभीबड़ायोगदानहोताहै।यदिदेशमेंविदेशनीतिकेलिए विशेषकानूनीप्रावधानहैं, तोसरकारउन्हींकेअनुरूपनिर्णयलेतीहै।उदाहरणकेतौरपर,
किसीदेशमेंयदिसंविधानमेंयहप्रावधानहोकिविदेशनीतिकोसंसदकीमंजूरीसेलागूकियाजाएगा,
तोइसकासीधाअसरउसदेशकीविदेशनीतिपरपड़ेगा।

7. नेताओंकादृष्टिकोण:

विदेशनीतिकोआकारदेनेमेंदेशकेनेताओंकीव्यक्तिगतसोचऔरदृष्टिकोणकाभीमहत्वपूर्णयोगदानहोताहै।कईबार,
एकप्रधानमंत्रीयाराष्ट्रपतिकेदृष्टिकोणऔरनेतृत्वक्षमताकेआधारपरविदेशनीतिमेंबदलावदेखेजातेहैं।उदाहरणकेतौरपर, कुछनेताअंतर्राष्ट्रीयरिश्तोंमेंसक्रियताऔरविस्तारकीनीतिअपनासकतेहैं,
जबकिकुछनेताओंकाध्यानदेशकीआंतरिकसमस्याओंपरज्यादाहोसकताहै।

डितनेहरूकेविदेशनीतिदृष्टिकोणकेमुख्यबिंदु:

1. नॉन-आलाइंडमूवमेंट (गैर-आलाइंडआंदोलन):

नेहरूजीनेभारतकीविदेशनीतिको**नॉन-आलाइंड**यानी "गैर-आलाइंड" आंदोलनकेसिद्धांतपरआधारितकिया।उनकामाननाथाकिभारतकोशीतयुद्धकेदोनोंप्रमुखगुटों (अमेरिकाऔरसोवियतसंघ) सेबचतेहुए, स्वतंत्ररूपसेवैश्विकमंचपरअपनीआवाज़उठानीचाहिए।वेचाहतेथेकिभारतअपनेराष्ट्रीयहितोंकीरक्षाकरतेहुए , किसीभीसैन्यगठबंधनकाहिस्सानबनेऔरएकस्वतंत्रराष्ट्रकेरूपमेंकार्यकरे।

2. शांतिपूर्णसह-अस्तित्व:

नेहरूजीनेवैश्विकशांतिऔरसुरक्षाकोप्राथमिकतादी।उनकाविश्वासथाकिदेशोंकोएकदूसरेकेआंतरिकमामलों मेंहस्तक्षेपकिएबिना, शांतिपूर्णसह-अस्तित्वकेसिद्धांतकापालनकरनाचाहिए।इसकाउद्देश्ययुद्धऔरहिंसासेबचनाऔरसंवादएवंसमझौतेके माध्यमसेविवादोंकासमाधानकरनाथा।

3. आत्मनिर्भरता (Self-reliance):

नेहरूजीकादृष्टिकोणयहथाकिभारतकोअंतरराष्ट्रीयमामलोंमेंआत्मनिर्भरऔरस्वतंत्रहोनाचाहिए।उन्होंनेवि देशनीतिकोइसतरहसेविकसितकियाकिभारतअपनीआर्थिक, राजनीतिकऔरसैन्यशक्तिकोबढ़ानेमेंसक्षमहो, ताकिवहकिसीभीवैश्विकदबावकासामनाकरसके।इसकेतहतउन्होंनेऔद्योगिकीकरणऔरविज्ञान-प्रौद्योगिकीकेविकासपरजोरदिया।

4. भारतकानेतृत्व:

पंडितनेहरूकामाननाथाकिभारतकोविकासशीलदेशोंकानेतृत्वकरनाचाहिए।उन्होंनेतThird World देशोंकेबीचसहयोगऔरसमर्थनकेलिएएकमजबूतआवाज़उठाई, ताकिवेऔपनिवेशिकशोषणसेमुक्तहोसकें।नेहरूजीनेयूएनओ (संयुक्तराष्ट्रसंघ) केमंचकाउपयोगकरकईदेशोंकेअधिकारोंकीरक्षाकेलिएकार्यकियाऔरवैश्विकमंचपरविकासशीलदेशोंकेलिए आवाज़उठाई।

5. मूल्यऔरनैतिकता:

नेहरूजीनेविदेशनीतिमें**मूल्यऔरनैतिकता**कोभीमहत्वदिया।उनकामाननाथाकिभारतीयसंस्कृतिऔरपरंपरा एँहमेंविश्वमेंशांति,

समानताऔरसहयोगकीओरअग्रसरहोनेकेलिएप्रेरितकरतीहैं।उन्होंनेवैश्विकसंबंधोंमेंअहिंसा, सच्चाईऔरन्यायकीनीतियोंकोबढ़ावादिया।

6. संयुक्तराष्ट्र (UN) औरअंतरराष्ट्रीयसंस्थाएँ:

नेहरूजीनेसंयुक्तराष्ट्रसंघऔरअन्यअंतरराष्ट्रीयसंस्थाओंकोमहत्वपूर्णमाना।उनकामाननाथाकियहसंस्थाएँवैश्विकशांतिऔरसुरक्षाकोबनाएरखनेकेलिएजरूरीहैंऔरभारतकोइनसंस्थाओंमेंसक्रियभूमिकानिभानीचाहिए।उन्होंनेसंयुक्तराष्ट्रकोसंघर्षोंकेसमाधानकेलिएएकमंचकेरूपमेंदेखा।

7. चीनकेसाथसंबंध:

पंडितनेहरूनेचीनकेसाथअपनेसंबंधोंमें**शांतिपूर्णसह-अस्तित्व**कासिद्धांतअपनायाथा।हालांकि, 1962 मेंभारत-चीनयुद्धकेबादउनकीनीतिमेंबदलावआया, लेकिनपहलेवेचीनकोएकमहत्वपूर्णमित्रमानतेथेऔरदोनोंदेशोंकेबीचअच्छेसंबंधोंकीवकालतकरतेथे।

8. नारीवादऔरमानवाधिकार:

नेहरूजीनेविदेशनीतिमें**मानवाधिकार**और**नारीवाद**कोभीमहत्वपूर्णस्थानदिया।उनकामाननाथाकिभारतको उनदेशोंकेसाथसंबंधबढ़ानेचाहिएजोसमानता, मानवाधिकारऔरलोकतांत्रिकमूल्योंकेपक्षधरहैं।

अंतर्राष्ट्रीयस्थिति (International Situation) कातात्पर्यवैश्विकस्तरपरदेशोंकेबीचकेराजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, औरसैन्यसंबंधोंसेहै।यहस्थितिविभिन्नदेशोंकेआपसीसंबंधों, वैश्विकशक्तियोंकेबीचसंघर्ष, अंतरराष्ट्रीयसमझौतों, संगठनऔरअन्यवैश्विकघटनाओंकेआधारपरआकारलेतीहै।

आजकेसंदर्भमें, अंतर्राष्ट्रीयस्थितिकईकारकोंद्वाराप्रभावितहोतीहै, जिनमेंराजनीतिकसंघर्ष, व्यापारिकसंबंध, पर्यावरणीयमुद्दे, सुरक्षाचिंताएँ, औरवैश्विकमहामारीजैसीसमस्याएँशामिलहैं।

नीचेकुछप्रमुखपहलुओंपरचर्चाकीगईहै, जोवर्तमानअंतर्राष्ट्रीयस्थितिकोप्रभावितकरतेहैं:

1. वैश्विकशक्तियोंकासंतुलन:

आजकेअंतर्राष्ट्रीयपरिदृश्यमें, **संयुक्तराज्यअमेरिका**, **चीन**, और**रूस**जैसीप्रमुखशक्तियाँवैश्विकराजनीतिमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभातीहैं।येशक्तियाँनकेवलसैन्यऔरआर्थिकदृष्टिकोणसेप्रभावीहैं, बल्किउनकीविदेशनीतियाँऔरकूटनीतिककदमभीवैश्विकस्थितिकोप्रभावितकरतेहैं।

- **अमेरिका**:
  अमेरिकादुनियाकीसबसेबड़ीआर्थिकऔरसैन्यशक्तिकेरूपमेंस्थापितहै।अमेरिकाकेराजनीतिकफैस लेवैश्विकराजनीतिकोप्रभावितकरतेहैं, जैसेकिव्यापारयुद्ध,
  जलवायुपरिवर्तनसमझौतोंसेबाहरनिकलना, औरवैश्विकसुरक्षाकोलेकरनीतियाँ।
- **चीन**: चीनतेजीसेएकप्रमुखवैश्विकशक्तिकेरूपमेंउभररहाहै।इसकीतेजीसेबढ़तीअर्थव्यवस्था,
  सैन्यशक्ति, औरबेल्टएंडरोड (BRI)
  जैसीवैश्विकपरियोजनाएँचीनकीबढ़तीवैश्विकभूमिकाकोदर्शातीहैं।
- **रूस**: रूसभीएकप्रमुखसैन्यऔरऊर्जाआपूर्तिशक्तिहै।रूसकेकदम,
  विशेषकरयूरोपऔरमध्यएशियामें, वैश्विककूटनीतिपरप्रभावडालतेहैं।उदाहरणस्वरूप,
  यूक्रेनसंकटऔररूस-यूक्रेनयुद्धनेयूरोपीयऔरवैश्विकस्थितिकोप्रभावितकियाहै।

2. अंतरराष्ट्रीयसंगठनोंकीभूमिका:

अंतरराष्ट्रीयस्थितिमेंविभिन्न**अंतरराष्ट्रीयसंगठनों**कीभीमहत्वपूर्णभूमिकाहै, जैसे:

- **संयुक्तराष्ट्र (UN)**: यहवैश्विकशांतिऔरसुरक्षा,
  मानवाधिकारोंऔरअंतरराष्ट्रीयसहयोगकोबढ़ावादेनेकेलिएस्थापितकियागयाथा।हालांकि,
  संयुक्तराष्ट्रकेविभिन्नअंगोंमेंअक्सरविभाजनऔरसंघर्षहोतेहैं,
  जोउसकीप्रभावशीलतापरसवालउठातेहैं।
- **विश्वव्यापारसंगठन (WTO)**:
  यहवैश्विकव्यापारकेनियमोंकोस्थापितकरनेऔरमुक्तव्यापारकोबढ़ावादेनेकेलिएकार्यकरताहै।
- **ग्लोबलक्लाइमेटचेंज**: जलवायुपरिवर्तनएकवैश्विकसमस्याबनगईहै,
  औरइसकेसमाधानकेलिएअंतरराष्ट्रीयप्रयासोंकीआवश्यकताहै।पेरिसजलवायुसमझौताइसकेमह त्वपूर्णउदाहरणोंमेंसेएकहै।

3. आर्थिकवैश्वीकरण:

आजकलवैश्वीकरणकेकारणदेशोंकेबीचव्यापारऔरनिवेशमेंवृद्धिहुईहै।हालांकि,
वैश्वीकरणनेकुछदेशोंकेलिएआर्थिकविकासकेअवसरखोलेहैं, वहींयहअसमानता,
बेरोजगारीऔरस्थानीयउद्योगोंपरदबावभीडालताहै।**वर्ल्डबैंक**, **अंतरराष्ट्रीयमुद्राकोष (IMF)**और**ग्लोबलफाइनेंशियलक्राइसिस**जैसेकारकवैश्विकआर्थिकस्थितिकोप्रभावितकरतेहैं।

4. जंगीसंघर्षऔरआतंकवाद:

दुनियामेंकईजंगेंऔरसंघर्षजारीहैं,
जोअंतर्राष्ट्रीयस्थितिकोप्रभावितकरतेहैं।इनसंघर्षोंकेकारणबड़ीसंख्यामेंलोगविस्थापितहोतेहैंऔरमानवीय संकटउत्पन्नहोतेहैं।उदाहरणकेलिए:

- **सीरियायुद्ध**: यहसंघर्षवैश्विककूटनीतिमेंविभाजनऔरतनावकाकारणबनाहै।
- **अफगानिस्तानसंकट**: तालिबानकेपुनःसत्तामेंआनेकेबादवैश्विकसुरक्षाचिंताएँबढ़ीहैं।
- **आतंकवाद**: आतंकवादीसंगठनोंजैसे**आईएसआईएस**और**अल-कायदा**काप्रभावभीअंतर्राष्ट्रीयसुरक्षास्थितिकोप्रभावितकरताहै।

5. पर्यावरणऔरजलवायुपरिवर्तन:

जलवायुपरिवर्तनएकवैश्विकसंकटबनचुकाहै, जोनकेवलप्राकृतिकसंसाधनोंकोप्रभावितकरताहै, बल्किदेशोंकेबीचटकरावऔरविवादभीउत्पन्नकरताहै।जलवायुपरिवर्तनसेनिपटनेकेलिएवैश्विकसहयोगकी आवश्यकताहै, औरपेरिसजलवायुसमझौतेजैसेकदमइसदिशामेंमहत्वपूर्णहैं।

6. कोविड-19 महामारी:

कोविड-19 महामारीनेवैश्विकस्थितिकोगहरेतरीकेसेप्रभावितकियाहै।इसमहामारीनेनकेवलमानवजीवनकोनुकसानप हुँचाया,
बल्किआर्थिकऔरसामाजिकक्षेत्रोंमेंभीअस्थिरतापैदाकी।देशोंकेबीचचिकित्साआपूर्तिऔरवैक्सीनेशनपरप्र तिस्पर्धाबढ़ी, जिससेवैश्विकसहयोगऔरराजनीतिपरअसरपड़ा।

7. प्रौद्योगिकीऔरसाइबरसुरक्षा:

प्रौद्योगिकी, विशेषकर**आर्टिफिशियलइंटेलिजेंस (AI)**, **ब्लॉकचेन**,
और**साइबरसुरक्षा**जैसेक्षेत्रोंमेंवृद्धिनेअंतर्राष्ट्रीयसंबंधोंकोनयामोड़दियाहै।देशोंकेबीचसाइबरहमलेऔरतकनी कीयुद्धबढ़रहेहैं, जोवैश्विकसुरक्षाऔरकूटनीतिकोप्रभावितकरतेहैं।

भारतमेंविदेशनीतिनिर्माणकीप्रक्रिया (Process of Foreign Policy Making in India)
एकजटिलऔरकईस्तरोंपरकामकरनेवालीप्रक्रियाहै,
जोदेशकेआंतरिकऔरबाहरीहितोंकोध्यानमेंरखतेहुएतयकीजातीहै।यहप्रक्रियाविभिन्नसंस्थाओं, मंत्रियों, औरराजनीतिकनेताओंकेबीचविचार-विमर्श, निर्णय-निर्माणऔरकार्यान्वयनकेचरणोंसेगुजरतीहै।

भारतकीविदेशनीतिकोआकारदेनेकेलिएकईप्रमुखतत्वऔरप्रक्रियाएँशामिलहोतीहैं:

1. प्रधानमंत्रीऔरमंत्रिमंडल:

भारतमेंविदेशनीतिबनानेकामुख्यजिम्मा**प्रधानमंत्री**औरउनके**मंत्रिमंडल**परहोताहै।प्रधानमंत्रीकेनेतृत्वमें, विदेशनीतिकेप्रमुखनिर्णयलिएजातेहैं।प्रधानमंत्रीविदेशनीतिकेलिएनीतिगतदिशानिर्धारितकरतेहैंऔरइसे लागूकरनेमेंउनकामहत्वपूर्णयोगदानहोताहै।विदेशनीतिसेसंबंधितप्रमुखनिर्णयोंकोमंत्रिमंडलकीबैठकमेंभी मंजूरीमिलतीहै।

2. विदेशमंत्रालय (Ministry of External Affairs):

विदेशमंत्रालयभारतसरकारकामुख्यअंगहैजोविदेशनीतिकोलागूकरनेऔरअंतरराष्ट्रीयमामलोंमेंदेशकीस्थि तिकोसंभालनेकाकार्यकरताहै।विदेशमंत्रालयमेंप्रमुखअधिकारी**विदेशमंत्री**होतेहैं, जोनीतिनिर्माणमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभातेहैं।विदेशमंत्रालयकेविभिन्नविभागोंकेअधिकारीकूटनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिकऔररक्षामामलोंमेंविदेशीदेशोंसेसंबंधितकार्योंकोसंभालतेहैं।

3. राष्ट्रीयसुरक्षासलाहकार (NSA):

राष्ट्रीयसुरक्षासलाहकार (NSA) कापदभारतकीसुरक्षाऔरविदेशनीतिमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभाताहै।NSA प्रधानमंत्रीकोराष्ट्रीयसुरक्षाऔरकूटनीतिकमामलोंमेंसलाहदेताहै।NSA कीभूमिका, विशेषरूपसेसुरक्षा, आतंकवाद, औरसैन्यरणनीतियोंसेजुड़ीनीतिबनानेमेंहोतीहै।

4. रक्षामंत्रालय:

रक्षामंत्रालयकाविदेशनीतिनिर्माणमेंभीएकमहत्वपूर्णयोगदानहोताहै।खासकरयदिकिसीमामलेमेंसैन्ययासु रक्षासेजुड़ेमुद्देसामनेआतेहैं, तोरक्षामंत्रालयकासहयोगप्राप्तकियाजाताहै।कईबार, भारतकीविदेशनीतिमेंसुरक्षामामलोंकोप्रमुखतादीजातीहै, जैसेचीन, पाकिस्तान, औरअन्यपड़ोसीदेशोंकेसाथरिश्तोंमें।

5. भारतीयसंसद:

भारतीयसंसदकाविदेशनीतिनिर्माणमेंअप्रत्यक्षयोगदानहोताहै।संसदमेंविदेशनीतिपरचर्चाहोतीहैऔरसांसद इसेलेकरअपनेविचारप्रस्तुतकरतेहैं।हालांकिविदेशनीतिकेप्रमुखनिर्णयमंत्रीमंडलद्वाराकिएजातेहैं, लेकिनसंसदइसकाआलोचनात्मकमूल्यांकनकरतीहैऔरकभी-कभीविदेशनीतिपरनएदिशा-निर्देशभीदेतीहै।

6. राजनीतिकदलऔरविचारधाराएँ:

राजनीतिकदलऔरउनकेविचारधाराएँभीभारतकीविदेशनीतिपरप्रभावडालतेहैं।विभिन्नदलोंकेदृष्टिकोणऔ
रउनकीप्राथमिकताएँविदेशनीतिमेंबदलावलासकतीहैं।उदाहरणकेलिए,
एकसमयपर**कांग्रेसपार्टी**कादृष्टिकोण**गैर-आलाइंडआंदोलन**परथा,
जबकिअन्यदलोंने**राष्ट्रीयसुरक्षा**और**आत्मनिर्भरता**कोअधिकमहत्वदियाहै।

7. वैश्विकस्थितिऔरअंतरराष्ट्रीयघटनाएँ:

विदेशनीतिकानिर्माणअक्सरवैश्विकपरिस्थितियोंऔरअंतरराष्ट्रीयघटनाओंसेप्रभावितहोताहै।उदाहरणके
लिए, यदिवैश्विकसंकट, जैसेकियुद्ध, आर्थिकमंदी, यापर्यावरणीयसंकटउत्पन्नहोतेहैं,
तोभारतकीविदेशनीतिकोइनघटनाओंकेअनुसारतैयारकियाजाताहै।इसकेअलावा,
देशोंकेबीचसैन्यययाकूटनीतिकतनाव, जैसेकिचीनयापाकिस्तानकेसाथसीमाविवाद,
भीविदेशनीतिनिर्माणमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभातेहैं।

8. गोपनीयताऔरकूटनीतिकचर्चा:

विदेशनीतिनिर्माणकीप्रक्रियामेंगोपनीयताऔरकूटनीतिकचर्चाएँभीमहत्वपूर्णहोतीहैं।अधिकतरनिर्णयअंतर
राष्ट्रीयस्तरपरलागूहोनेसेपहलेगुप्तरूपसेकूटनीतिकसंवादऔरचर्चाकेबादकिएजातेहैं।इसप्रक्रियामें,
सरकारविदेशनीतिकेविभिन्नपहलुओंपरविशेषज्ञोंसेसलाहलेतीहैऔरकईबाररणनीतिकदृष्टिकोणसेविचार-
विमर्शकरतीहै।

9. सार्वजनिकरायऔरमीडिया:

विदेशनीतिनिर्माणमें**सार्वजनिकराय**औरमीडियाकीभूमिकाभीबढ़ीहै।खासकरवैश्विकघटनाओंऔरविदेशनी
तिकेबड़ेफैसलोंपरजनताकीप्रतिक्रियाकोसरकारगंभीरतासेलेतीहै।मीडियाऔरसार्वजनिकबहसोंसेविदेशनी
तिकोलेकरजागरूकताऔरआलोचनाउत्पन्नहोतीहै, जोनिर्णयप्रक्रियाकोप्रभावितकरतीहै।

10. विचारधाराऔरराष्ट्रीयहित:

विदेशनीतिकाएकमहत्वपूर्णपहलू**राष्ट्रीयहित**होताहै।नीतिनिर्माणमेंयहसुनिश्चितकियाजाताहैकिभारतकेदी
र्घकालिकहितोंकीरक्षाहो, चाहेवह**आर्थिकविकास**, **राष्ट्रीयसुरक्षा**, **व्यापारिकसंबंध**,
पर्यावरणया**मानवाधिकार**सेसंबंधितहो।इसकेसाथही,
भारतकी**धर्मनिरपेक्षता**और**लोकतांत्रिकसिद्धांत**भीविदेशनीतिकेआधारहोतेहैं।

Unit-3

गैर-आलाइंड (Non-Alignment)कामतलबहैकिकोईदेशकिसीसैन्यगठबंधनयाराजनीतिकगुटकेसाथनजुड़करस्वतंत्ररूपसेअपनीविदेशनीतितयकरताहै।इससिद्धांतकेअंतर्गत, एकदेशशीतयुद्ध (Cold War) केदौरानदोप्रमुखमहाशक्तियों—अमेरिकाऔरसोवियतसंघ—केसाथसैन्ययाराजनीतिकगठबंधनमेंशामिलनहींहोता।

भारतनेइसनीतिकोअपनायाथा, जिसकामुख्यउद्देश्ययहथाकिदेशस्वतंत्ररूपसेअपनेराष्ट्रीयहितोंकेअनुसारकामकरें, बिनाकिसीबाहरीदबावके।यहनीति**नेहरूवाद**सेप्रेरितथी, जिसे**पंडितजवाहरलालनेहरू**नेलागूकियाथा।

गैर-आलाइंडआंदोलनकेमुख्यसिद्धांत:

1. **स्वतंत्रताऔरआत्मनिर्भरता**:
   अपनेराष्ट्रीयहितोंकेअनुरूपफैसलेलेनाऔरकिसीभीबड़ेसैन्यगुटसेजुड़नेसेबचना।
2. **सामूहिकसुरक्षा**: शांतिऔरसहयोगकेसिद्धांतपरआधारितअंतरराष्ट्रीयसंबंधोंकोबढ़ावादेना।
3. **गुटनिरपेक्षता**:
   शीतयुद्धकेदौरानअमेरिकाऔरसोवियतसंघकेदोनोंप्रमुखगुटोंसेअलगरहकरअपनीस्वतंत्रकूटनीतिबनाना।

भारतने**गैर-आलाइंडआंदोलन (NAM)**कीशुरुआत1961 मेंकीथी, जिसमेंभारतकेअलावाकईविकासशीलदेशोंनेभीभागलिया।इसआंदोलनकाउद्देश्यथावैश्विकशांतिबनाएरखना, आंतरिकसंघर्षोंकोहलकरनाऔरसंघर्षोंकेसमाधानकेलिएस्वतंत्रदृष्टिकोणअपनाना।

गैर-आलाइंडआंदोलन (Non-Alignment Movement - NAM), जो1961 मेंप्रारंभहुआ, एकमहत्वपूर्णअंतरराष्ट्रीयकूटनीतिकआंदोलनहै, जिसकाउद्देश्यशीतयुद्धकेदौरानदेशोंकोकिसीभीमहाशक्तिकेसैन्यऔरराजनीतिकगुटोंसेबचाकरस्वतंत्रऔरतटस्थनीतिअपनानेकेलिएप्रेरितकरनाथा।भारतकेप्रधानमंत्री**पंडितजवाहरलालनेहरू**नेइसआंदोलनकीशुरुआतकीथीऔरभारतनेइसमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभाईथी।

गैर-आलाइंडआंदोलनकेप्रमुखविशेषताएँ (Features of Non-Alignment Movement):

1. **गुटनिरपेक्षता**:

- गैर-आलाइंडआंदोलनकामुख्यउद्देश्यथाकिसीभीसैन्यगुट (अमेरिकाकेनेतृत्वमेंपश्चिमीगुटऔरसोवियतसंघकेनेतृत्वमेंपूर्वीगुट) सेअलगरहना।इसकामतलबयहथाकिसदस्यदेशस्वतंत्ररूपसेअपनेराष्ट्रीयहितोंकेअनुसार विदेशनीतितयकरेंगे, बिनाकिसीबाहरीदबावके।

2. **शांतिऔरसुरक्षाकीनीति**:
   - गैर-आलाइंडआंदोलनशांति, अंतरराष्ट्रीयसहयोगऔरसंघर्षोंकेसमाधानकेलिएएकनिष्पक्षदृष्टिकोणकोबढ़ावादेताथा।इसकाउद्देश्यविश्वशांतिबनाएरखनाऔरयुद्धकीसंभावनाकोकमकरनाथा।
3. **समानताऔरसहयोग**:
   - इसआंदोलनकाउद्देश्यविकासशीलदेशोंकेबीचसमानता, सहयोगऔरआपसीसहायताकोबढ़ावादेनाथा।इसमेंप्रमुखरूपसेअफ्रीका, एशियाऔरलैटिनअमेरिकाकेविकासशीलदेशशामिलथे।
4. **स्वतंत्रताऔरआत्मनिर्भरता**:
   - आंदोलनकेसदस्यदेशोंकामाननाथाकिउन्हेंअपनीआंतरिकऔरबाहरीनीतियोंमेंपूरीस्वतंत्रताऔरआत्मनिर्भरताहासिलकरनीचाहिए, ताकिवेअपनीविकासयात्रामेंबाधितनहों।
5. **शीतयुद्धसेबचाव**:
   - गैर-आलाइंडआंदोलनशीतयुद्धकेदौरानपैदाहोनेवालीदोनोंमहाशक्तियोंकेबीचतनावसेबचनेकाएकप्रयासथा।यहआंदोलनकिसीएकगुटकेपक्षमेंनहोकरतीसरेदुनियाकेदेशोंकोएकमंचप्रदानकरताथा।

गैर-आलाइंडआंदोलनकेसिद्धांत (Bases of Non-Alignment Movement):

1. **राष्ट्रीयस्वतंत्रता**:
   - प्रत्येकदेशकोअपनेआंतरिकऔरबाहरीमामलोंमेंपूरीस्वतंत्रताकाअधिकारहै।देशोंकोकिसीभीबाहरीदबावयासैन्यगठबंधनमेंनफंसाकरअपनीविदेशनीतिस्वायत्तरूपसेनिर्धारितकरनीचाहिए।
2. **शांतिपूर्णसह-अस्तित्व**:
   - यहसिद्धांतइसबातपरआधारितथाकिसभीदेशोंकोएक-दूसरेकेसाथशांतिसेरहनाचाहिएऔरआंतरिकमामलोंमेंहस्तक्षेपनहींकरनाचाहिए।
3. **किसीभीयुद्धसेबचना**:

- गैर-
  आलाइंडआंदोलननेयुद्धकीनिंदाकीऔरसंघर्षोंकासमाधानकूटनीतिऔरसंवादसेनिकालनेकीकोशिशकी।

4. **अंतरराष्ट्रीयसहयोग**:
   - गैर-आलाइंडदेशोंनेअंतरराष्ट्रीयसंस्थाओंमेंसहयोगबढ़ानेऔरसंयुक्तराष्ट्र (UN) मेंसमानरूपसेकार्यकरनेपरजोरदिया।
5. **धर्मनिरपेक्षदृष्टिकोण**:
   - आंदोलनमेंभागलेनेवालेदेशोंनेधर्मनिरपेक्षताकोबढ़ावादियाऔरयहसुनिश्चितकियाकिअंतरराष्ट्रीयसंबंधधर्म, जातियाभाषासेऊपरहों।

भारतकीभूमिका (India's Role in Non-Alignment Movement):

भारतनेगैर-
आलाइंडआंदोलनमेंएकप्रमुखऔरनेतृत्वकारीभूमिकानिभाई।पंडितनेहरूकेनेतृत्वमेंभारतनेइसआंदोलनकीदिशाकोआकारदियाऔरउसेवैश्विकमंचपरस्थापितकिया।

1. **नेहरूजीकानेतृत्व**:
   - पंडितनेहरूनेगैर-
     आलाइंडआंदोलनकेसिद्धांतोंकोस्थापितकियाऔरउन्हेंलागूकरनेकेलिएदेशकेसाथ-साथअंतरराष्ट्रीयसमुदायकोप्रेरितकिया।उनकायहमाननाथाकिभारतकोकिसीभीसैन्यगुटमेंनहींशामिलहोनाचाहिएऔरशांति, सह-अस्तित्वऔरसहयोगकीनीतिअपनानीचाहिए।
2. **गैर-आलाइंडआंदोलनकीनींव**:
   - 1955 में**बांदंगुंगसम्मेलन**केबाद, भारतनेअन्यविकासशीलदेशोंकेसाथमिलकर1961 में**बेलग्रेड (यूगोस्लाविया)**मेंपहलेगैर-आलाइंडसम्मेलनकाआयोजनकिया, जिसमें25 देशोंनेभागलिया।यहसम्मेलनगैर-आलाइंडआंदोलनकाऔपचारिकआरंभथा, औरभारतनेइसकेआधारकोमजबूतकिया।
3. **दूसरीदुनियाकेदेशोंकेसाथसहयोग**:
   - भारतनेतीसरीदुनियाकेदेशोंकेहितोंकोअपनेविदेशनीतिमेंसर्वोपरिमाना।उसनेअफ्रीका, एशियाऔरलैटिनअमेरिकाकेविकासशीलदेशोंकोएकमंचपरलाकरउनकीआवाज़कोवैश्विकस्तरपरउठाया।
4. **अंतरराष्ट्रीयमंचपरभारतकीआवाज़**:
   - भारतनेसंयुक्तराष्ट्रसंघमेंकईबारविकासशीलदेशोंकेअधिकारोंकीरक्षाकीऔरशांति, समानता, औरसंघर्षोंकेसमाधानकेलिएवैश्विकस्तरपरअपनापक्षरखा।

5. **कूटनीतिकपहल**:
    - भारतनेशीतयुद्धकेदौरानअपनीकूटनीतिकोसंतुलितबनाएरखतेहुएदोनोंमहाशक्तियों (अमेरिकाऔरसोवियतसंघ)
      केसाथअच्छेसंबंधबनाएरखे।भारतनेकभीभीकिसीएकपक्षकोसमर्थननहींदिया,
      बल्किहमेशातटस्थरहनेकीनीतिअपनाई।

तीसरीदुनियाऔरगैर-आलाइंडआंदोलन:

गैर-
आलाइंडआंदोलनकेतहतमुख्यरूपसे**तीसरीदुनियाकेदेशों**नेअपनीभागीदारीदिखाई।तीसरीदुनियाकेदेशोंमेंवेदेशशामिलथे, जोऔपनिवेशिकशासनसेमुक्तहुएथेऔरअबस्वतंत्रताप्राप्तकरचुकेथे,
लेकिनउनकाविकासबाकीदेशोंकीतुलनामेंकाफीपीछेथा।इनदेशोंकाउद्देश्यथा:

1. **औपनिवेशिकतासेमुक्ति**:
   तीसरीदुनियाकेदेशोंनेअपनेआपकोऔपनिवेशिकशक्तियोंसेमुक्तकरानेकेलिएगैर-आलाइंडआंदोलनकाहिस्साबनकरसंघर्षकिया।
2. **आर्थिकऔरसामाजिकविकास**:
   इनदेशोंनेआर्थिकविकासकेलिएएकदूसरेसेसहयोगबढ़ानेकीआवश्यकतामहसूसकी।
3. **अंतरराष्ट्रीयराजनीतिकस्थिरता**:
   इनदेशोंनेसंयुक्तरूपसेवैश्विकमंचपरअपनीपहचानबनाईऔरअपनीआवाज़कोप्रभावीबनानेकीकोशिशकी।

भारतकासुरक्षापर्यावरण (India's Security Environment) औरभारतकीविदेशनीतिकाघरेलूवातावरण (Domestic Environment of India's Foreign Policy)

Unit-4

1. भारतकासुरक्षापर्यावरण (India's Security Environment):

भारतकासुरक्षापर्यावरणबहुतहीजटिलऔरविविधहै,
जिसमेंकईप्रकारकीचुनौतियाँऔरखतरेशामिलहैं।इनचुनौतियोंकासामनाकरतेहुए,
भारतकोअपनीसुरक्षाकोसुनिश्चितकरनेकेलिएसामरिक,
कूटनीतिकऔरराजनीतिकदृष्टिकोणसेकईरणनीतियाँअपनानीपड़तीहैं।

1. **पाकिस्तानकेसाथसीमाविवाद**:

- भारतऔरपाकिस्तानकेबीच1947 सेहीकश्मीरकामुद्दाएकप्रमुखविवादरहाहै, जोदोनोंदेशोंकेबीचयुद्धऔरसंघर्षकाकारणबनचुकाहै।पाकिस्तानका**आतंकीगतिविधियोंमें समर्थन**औरसीमापर**पाकिस्तानीसेनाकेसाथसंघर्ष**भारतकेलिएसुरक्षाकीएकमहत्वपूर्णचुनौतीबनीहुईहै।

2. **चीनकेसाथसीमाविवाद**:
   - भारतऔरचीनकेबीच**लद्दाखऔरअरुणाचलप्रदेश**जैसेक्षेत्रोंमेंसीमाविवादरहाहै।1962 कायुद्धइसकेउदाहरणकेरूपमेंदेखाजाताहै।चीनकीबढ़तीसैन्यशक्तिऔररणनीतिकगतिविधियाँ, जैसे"**बेल्टएंडरोडइनिशिएटिव" (BRI)**और**दक्षिणएशियामेंप्रभावक्षेत्रकाविस्तार**, भारतकीसुरक्षापरदबावडालतीहैं।
3. **आतंकवाद**:
   - भारतविशेषरूपसेजम्मूऔरकश्मीरमेंआतंकवादकीसमस्यासेजूझरहाहै।पाकिस्तानसेसंचालितआतंकवादीसमूहोंद्वाराभारतमेंआतंकवादीहमलेऔरघुसपैठकीघटनाएँलगातारहोतीरहतीहैं।
4. **सैन्यसंघर्षोंऔरक्षेत्रीयअस्थिरता**:
   - **अफगानिस्तान**मेंहालकीराजनीतिकअस्थिरताऔर**मध्यएशिया**मेंचलरहेसंघर्ष, भारतकीसुरक्षापरप्रभावडालसकतेहैं।इसकेअलावा, **मालदीव**, **नेपाल**और**श्रीलंका**जैसेदेशोंमेंहोनेवालीराजनीतिकघटनाएँभीभारतकेक्षेत्रीयसुरक्षापरअसरडालतीहैं।
5. **परमाणुहथियारऔरमिसाइलतकनीक**:
   - भारतकेपासपरमाणुहथियारहैं, लेकिनइसकेपड़ोसीदेशोंकेपासभीपरमाणुशक्तिकाअस्तित्वहै, जैसेपाकिस्तानऔरचीन।इसकेचलते**परमाणुयुद्ध**कीसंभावनाऔर**सामरिकसंतुलन**कामुद्दाभीअहमबनजाताहै।

भारतकीसुरक्षारणनीतियाँ:

- **"सामरिकबफरजोन" कीरक्षा**:
  भारतअपनेपड़ोसीदेशोंकेसाथकूटनीतिकसंबंधोंकोमजबूतकरनेकीकोशिशकरताहै, ताकिसामरिकतनावकोकमकियाजासके।
- **"प्रोएक्टिवडिफेंस"**:
  भारतनेअपनीरक्षानीतिमें**सशस्त्रबलोंकीक्षमताकोबढ़ाना**और**सीमापरमजबूतगश्त**कोप्राथमिकतादीहै।

- **"पूर्वीसमुद्रनीति"**:
  भारतने**भारतीयमहासागरक्षेत्र**मेंअपनीसैन्यउपस्थितिकोबढ़ायाहैताकिवहसमुद्रीसुरक्षासुनिश्चितक रसके।
- **"सैन्यगठबंधन"**: भारत**क्वाड (QUAD)**जैसेसैन्यगठबंधनोंमेंसक्रियभागीदारीकरताहै, जोक्षेत्रीयसुरक्षाकोबढ़ावादेनेकेलिएकामकरतेहैं।

---

2. भारतकीविदेशनीतिकाघरेलूवातावरण (Domestic Environment of India's Foreign Policy):

भारतकीविदेशनीतिपरउसकेघरेलूवातावरणकागहराप्रभावपड़ताहै।यहाँघरेलूराजनीति, आर्थिकपरिस्थितियाँ, समाजिकऔरसांस्कृतिकविचारधारा, औरआंतरिकसुरक्षाचुनौतियाँमिलकरभारतकीविदेशनीतिकोआकारदेतीहैं।

1. **राजनीतिकस्थिरताऔरसरकारकीविचारधारा**:
   - भारतकीसरकारकीविचारधाराऔरनेतृत्वविदेशनीतिकेनिर्णयोंमेंप्रमुखभूमिकानिभातेहैं।जै सेयदिभारतमें**कांग्रेसपार्टी**सत्तामेंहोतीहै, तोउसकीविदेशनीतिमें**गैर-आलाइंडआंदोलन**और**गुटनिरपेक्षता**कीदिशाकोप्रमुखतामिलतीहै, जबकि**भा.ज.पा.** (भारतीयजनतापार्टी) केनेतृत्वमेंभारतकीविदेशनीतिमें**राष्ट्रीयसुरक्षा**, **आत्मनिर्भरता**और**वैश्विकप्रभाव**कोअधिकमहत्वदियाजाताहै।
2. **आर्थिकस्थितिऔरविकास**:
   - भारतकीआर्थिकस्थितिऔरविकासलक्ष्यउसकीविदेशनीतिकोप्रभावितकरतेहैं।**आर्थिकवि कास**और**व्यापारिकसंबंधों**कोबढ़ावादेनेकेलिएभारतकीविदेशनीतिमें**व्यापारसमझौतों**, **विदेशीनिवेश**और**आर्थिकसहयोग**कोप्रमुखतादीजातीहै।
   - **मेकइनइंडिया**, **आत्मनिर्भरभारत**जैसीयोजनाएँविदेशनीतिकेसाथजुड़ीहुईहैं, क्योंकियहनीतियाँभारतकेवैश्विकव्यापारऔररणनीतिकरिश्तोंमेंसुधारकरनेकेलिएकामक रतीहैं।
3. **सामाजिकऔरसांस्कृतिकदृष्टिकोण**:
   - **भारतकीसांस्कृतिकऔरसभ्यतागतविरासत**भीविदेशनीतिकोप्रभावितकरतीहै।भारतकी**सं विधानिकधर्मनिरपेक्षता**, **सांस्कृतिकआदान-प्रदान**और**मानवाधिकार**कीविचारधाराविदेशनीतिमेंमहत्वपूर्णस्थानरखतीहै।

- **प्रवासियों (NRI)**केमुद्दे, **भारतीयसंस्कृति**काप्रचारऔर**हिंदूधर्म**कीविचारधारा, खासकर**पारंपरिकनीतियों**कोप्रोत्साहितकरनेकेमामलेमेंभारतकीविदेशनीतिकोप्रभावितकरतेहैं।

4. **आंतरिकसुरक्षाऔरआतंकवाद**:
   - **आतंकीहमलों**और**सुरक्षासमस्याओं**केमद्देनजरभारतकोअपनीविदेशनीतिमेंसमायोजनकरनापड़ताहै।जैसे, **कश्मीरमुद्दा**, **पाकिस्तानसेआतंकवाद**और**चीनकेसाथसीमाविवाद**भारतकीसुरक्षानीतिऔरविदेशनीतिकोप्रभावितकरतेहैं।
5. **लोकप्रियरायऔरमीडिया**:
   - भारतमेंसार्वजनिकरायऔरमीडियाभीविदेशनीतिकोप्रभावितकरतेहैं।जनताकीप्रतिक्रियाऔरमीडियाकीरिपोर्टिंग, खासकरआतंकवाद, सीमाविवादऔरवैश्विकमामलोंमेंभारतकेरुखकोआकारदेतीहै।

भारतकीविदेशनीतिकेघरेलूप्रभाव:

- **सुरक्षाऔरकूटनीतिकनिर्णय**: घरेलूसुरक्षाचिंताएँजैसे**पाकिस्तानकेसाथतनाव**या**चीनकेसाथसीमासंघर्ष**भारतकीविदेशनीतिमेंप्रमुखबदलावोंकाकारणबनतीहैं।
- **व्यापारिकरणनीतियाँ**: घरेलूआर्थिकविकासकेलिए**आर्थिकसंबंधोंऔरव्यापारिकसमझौतों**कोबढ़ावादेनाभारतकीप्राथमिकताबनजातीहै।
- **राजनीतिकविचारधारा**: सरकारकीविचारधाराकेअनुसारभारतकीविदेशनीतिबदलतीरहतीहै।उदाहरणकेलिए, **नेहरूवादीगैर-आलाइंडनीति**सेलेकर**मोदीसरकारकीआत्मनिर्भरताऔरवैश्विकताकतबननेकीदिशा**तककेपरिवर्तन ।
- **विदेशनीतिकाक्षेत्रीयपर्यावरण (Regional Environment of Foreign Policy)**उसभौगोलिकयाराजनीतिकक्षेत्रकेसंदर्भमेंहोताहै, जिसमेंएकदेशअपनीविदेशनीतिकोआकारदेताहैऔरलागूकरताहै।यहपर्यावरणउनक्षेत्रीयताकतों, घटनाओंऔरपरिस्थितियोंसेप्रभावितहोताहै, जोकिसीविशेषभौगोलिकक्षेत्रमेंघटितहोतीहैं।इसमेंदेशोंकेआपसीसंबंध, क्षेत्रीयसहयोग, औरसंघर्ष, साथहीवैश्विकशक्तिसंतुलनऔरअन्यअंतरराष्ट्रीयप्रभावशामिलहोतेहैं।

विदेशनीतिकेक्षेत्रीयपर्यावरणकेप्रमुखतत्वोंमेंनिम्नलिखितशामिलहैं:

1. भौगोलिकस्थिति:

- एकदेशकीभौगोलिकस्थितिउसकेविदेशनीतिकेनिर्णयोंकोप्रभावितकरतीहै।उदाहरणकेलिए, एशिया, यूरोप, याअफ्रीकामेंस्थितदेशोंकीप्राथमिकताएँऔरसंघर्षअलगहोसकतेहैं, क्योंकिवेअपनेआस-पासकेदेशोंऔरक्षेत्रोंकेसाथअलगप्रकारकेसंबंधबनाएरखतेहैं।

2. क्षेत्रीयताकतोंकाप्रभाव:

- हरक्षेत्रमेंकुछप्रमुखताकतेंहोतीहैं, जोउसक्षेत्रकीराजनीतिऔरआर्थिकदिशातयकरतीहैं।उदाहरणकेलिए, दक्षिणएशियामेंभारतएकप्रमुखताकतहै, तोयूरोपमेंजर्मनीऔरफ्रांसमहत्वपूर्णहैं।

3. संघर्षऔरसहयोग:

- क्षेत्रीयसंघर्ष, जैसेसीमाविवाद, जातीययाधार्मिकमतभेद, याअन्यविवाद, एकदेशकीविदेशनीतिकोप्रभावितकरसकतेहैं।इसकेविपरीत, क्षेत्रीयसहयोग (जैसेएशियाईदेशोंकेबीचव्यापारिकसमझौते) भीविदेशनीतिकीदिशाकोआकारदेताहै।

4. सार्वजनिकऔरनिजीकूटनीति:

- क्षेत्रीयपर्यावरणदेशोंकेबीचकूटनीतिकसंबंधोंकोप्रभावितकरताहै, जोउन्हेंसाझाहितों (जैसेसुरक्षा, व्यापार, औरसंसाधन) औरव्यक्तिगतहितोंकोध्यानमेंरखतेहुएआपसीसमझौतेबनानेकेलिएप्रेरितकरतेहैं।

5. क्षेत्रीयसंगठनऔरसंस्थाएँ:

- क्षेत्रीयसंगठनजैसे**ASEAN** (दक्षिण-पूर्वएशियाईराष्ट्रोंकासंघ), **SAARC** (दक्षिणएशियाईक्षेत्रीयसहयोगसंगठन), **EU** (यूरोपीयसंघ) आदिविदेशनीतिपरगहराप्रभावडालतेहैं।इनसंगठनोंकेसदस्यदेशोंकेबीचराजनीतिक, आर्थिक, औरसुरक्षासहयोगकाबड़ायोगदानहोताहै।

6. वैश्विकताकतोंकाप्रभाव:

- विश्वशक्तियाँ, जैसेअमेरिका, चीन, रूसआदि,
  भीक्षेत्रीयपर्यावरणकोप्रभावितकरतीहैं।उदाहरणकेलिए,
  यदिकोईक्षेत्रवैश्विकशक्तियोंकेहितोंकेतहतहै,
  तोवहाँकीविदेशनीतिइनशक्तियोंकेसाथतालमेलरखनेकेलिएप्रभावितहोसकतीहै।

7. आर्थिकऔरव्यापारिकसंबंध:

- क्षेत्रीयआर्थिकसहयोगऔरव्यापारिकसमझौतेभीविदेशनीतिकोप्रभावितकरतेहैं।देशोंकेबीचक्षेत्रीय व्यापारसमझौते (जैसे**RCEP** – Regional Comprehensive Economic Partnership) सेक्षेत्रीयआर्थिकएकीकरणऔरसहयोगकोबढ़ावामिलताहै।

8. सुरक्षाऔररक्षाप्राथमिकताएँ:

- क्षेत्रीयसुरक्षापरिदृश्य, जैसेक्षेत्रीयरक्षागठबंधनयाआतंकवादऔरसीमाविवाद,
  देशोंकीविदेशनीतिकेसुरक्षापहलूकोआकारदेतेहैं।उदाहरणकेलिए,
  भारतऔरपाकिस्तानकेबीचतनावपूर्णस्थिति, यादक्षिणचीनसागरमेंचीनकाप्रभाव,
  दोनोंहीदेशोंकीविदेशनीतिपरअसरडालतेहैं।

उदाहरण:

- **भारतकीविदेशनीतिकाक्षेत्रीयपर्यावरण**:
  भारतकीविदेशनीतिपरदक्षिणएशियाकाक्षेत्रीयपर्यावरणमहत्वपूर्णप्रभावडालताहै।भारतकोपाकिस्तान, चीन, नेपाल, श्रीलंका,
  बांगलादेशऔरअन्यदक्षिणएशियाईदेशोंकेसाथसंबंधोंकोसंतुलितकरनाहोताहै,
  जोविभिन्नप्रकारकीचुनौतियोंऔरअवसरोंकासामनाकरतेहैं।

इसप्रकार, विदेशीनीतिकाक्षेत्रीयपर्यावरणउनविभिन्नकारकोंकोशामिलकरताहै,
जोएकदेशकीविदेशनीतिकोप्रभावितकरतेहैंऔरउसेक्षेत्रीयऔरवैश्विकसंदर्भमेंप्रतिक्रियादेनेकेलिएप्रेरितकरते हैं।

अंतरराष्ट्रीयपर्यावरण (International Environment)कामतलबउसवैश्विकसंदर्भसेहैजिसमेंएकदेशअपनीविदेशनीति, कूटनीति,
औरअन्यअंतरराष्ट्रीयसंबंधोंकोनिर्धारितकरताहै।यहपर्यावरणवैश्विकशक्तियों, अंतरराष्ट्रीयसंगठन,
वैश्विकसमस्याओंऔरप्रवृत्तियों,

तथाविभिन्नदेशोंकेआपसीरिश्तोंसेप्रभावितहोताहै।अंतरराष्ट्रीयपर्यावरणनकेवलदेशोंकेआपसीसंबंधोंकोआकारदेताहै, बल्किवैश्विकराजनीति, सुरक्षा, आर्थिकस्थिति, औरसांस्कृतिकआदान-प्रदानकोभीप्रभावितकरताहै।

अंतरराष्ट्रीयपर्यावरणकेप्रमुखतत्वोंमेंनिम्नलिखितशामिलहैं:

1. वैश्विकशक्तियाँ (Global Powers):

- अंतरराष्ट्रीयपर्यावरणमेंवैश्विकशक्तियाँजैसे**अमेरिका**, **चीन**, **रूस**, **यूरोपीयसंघ**और**भारत**जैसीप्रमुखताकतेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभातीहैं।इनदेशोंकेराजनीतिक, आर्थिक, औरसैन्यप्रभावसेवैश्विकनिर्णयोंऔरघटनाओंकादिशा-निर्देशनहोताहै।

2. अंतरराष्ट्रीयसंगठन (International Organizations):

- अंतरराष्ट्रीयसंगठनोंजैसे**संयुक्तराष्ट्र (UN)**, **विश्वव्यापारसंगठन (WTO)**, **अंतरराष्ट्रीयमुद्राकोष (IMF)**, **विश्वस्वास्थ्यसंगठन (WHO)**, **नाटो (NATO)**आदिकावैश्विकनीतिऔरसहयोगपरगहराअसरपड़ताहै।येसंगठनदेशोंकेबीचसंवाद, सहमति, औरसहयोगबढ़ानेकेलिएबनेहैंऔरवैश्विकमुद्दोंजैसेसुरक्षा, व्यापार, मानवाधिकार, औरस्वास्थ्यपरकार्यकरतेहैं।

3. वैश्विकअर्थव्यवस्था (Global Economy):

- वैश्विकआर्थिकस्थिति, जैसेअंतरराष्ट्रीयव्यापार, निवेश, वित्तीयबाजार, औरविकासशीलदेशोंकीस्थिति, देशोंकेआर्थिकसंबंधोंकोप्रभावितकरतीहै।उदाहरणकेलिए, वैश्विकमंदीयाआर्थिकसंकटकाप्रभावकिसीभीदेशकीआर्थिकनीतिपरपड़सकताहै।**ग्लोबलाइजेशन**केकारणदेशोंकेबीचआर्थिकनिर्भरताबढ़ीहै, जिससेअंतरराष्ट्रीयव्यापारऔरनिवेशमेंबदलावआतेहैं।

4. वैश्विकसंघर्षऔरसुरक्षा (Global Conflicts and Security):

- अंतरराष्ट्रीयपर्यावरणमेंयुद्ध, आतंकवाद, औरसैन्यसंघर्षजैसेमुद्देवैश्विकसुरक्षाकोप्रभावितकरतेहैं।उदाहरणकेलिए, **सीरियायुद्ध**, **अफगानिस्तानसंघर्ष**, **यूक्रेनसंकट**, और**दक्षिणचीनसागरविवाद**जैसेक्षेत्रीयसंघर्षोंकावैश्विकप्रभावपड़ताहै।वैश्विकशक्तिसंघर्षऔरसैन्यगठबंधनोंकीभूमिकाभीमहत्वपूर्णहोतीहै।

5. संशोधनात्मकऔरविकासात्मकमुद्दे (Reform and Development Issues):

- वैश्विकस्तरपरदेशोंकोसामूहिकरूपसेविभिन्नवैश्विकमुद्दोंकासमाधानकरनाहोताहै, जैसे**जलवायुपरिवर्तन**, **विकासशीलदेशोंकीआर्थिकस्थिति**, **स्वास्थ्यसंकट** (जैसेकोरोनामहामारी), और**प्राकृतिकसंसाधनोंकासंरक्षण**।इनमुद्दोंकेसमाधानकेलिएअंतरराष्ट्रीयसहयोगआवश्यकहै।

6. विकासशीलदेशोंकीस्थिति (Status of Developing Countries):

- अंतरराष्ट्रीयपर्यावरणमेंविकासशीलदेशोंकीस्थितिऔरउनकीसमस्याएँभीमहत्वपूर्णहैं।इनमेंगरीबी, शिक्षा, स्वास्थ्य, औरबुनियादीसुविधाओंकीकमीजैसीचुनौतियाँशामिलहैं।वैश्विकशक्तियाँऔरअंतरराष्ट्रीयसंगठन अक्सरइनसमस्याओंकेसमाधानकेलिएकार्यक्रमऔरपरियोजनाएँशुरूकरतेहैं।

7. अंतरराष्ट्रीयकूटनीतिऔरवार्ता (International Diplomacy and Negotiation):

- देशोंकेबीचकूटनीतिकसंबंधों, वार्ताओंऔरसमझौतोंकावैश्विकपरिप्रेक्ष्यपरमहत्वपूर्णप्रभावपड़ताहै।उदाहरणकेलिए, **पेरिसजलवायुसमझौता**और**आयरनक्यूबासंधि**जैसीकूटनीतिकपहलेंअंतरराष्ट्रीयपर्यावरणकाहि स्साहैं।देशोंकेबीचराजनयिकरिश्तोंऔरसंधियोंकागठनअंतरराष्ट्रीयनीतिकोप्रभावितकरताहै।

8. सांस्कृतिकआदान-प्रदान (Cultural Exchange):

- अंतरराष्ट्रीयपर्यावरणकेवलराजनीतिकऔरआर्थिकहीनहीं, बल्किसांस्कृतिकऔरसामाजिकदृष्टिकोणसेभीप्रभावितहोताहै।**संस्कृतिकसंवाद**, **विदेशीशिक्षा**, और**सामाजिकआदान-प्रदान**देशोंकेरिश्तोंमेंसामंजस्यऔरसमझदारीबढ़ातेहैं।यह "मुल्टीपोलर" दुनियाकेनिर्माणमेंभीमहत्वपूर्णभूमिकानिभाताहै।

9. वैश्विकजलवायुऔरपर्यावरणीयसंकट (Global Climate and Environmental Crisis):

- **जलवायुपरिवर्तन**, **प्राकृतिकआपदाएँ**, और**प्रदूषण**जैसेपर्यावरणीयसंकटोंकासमाधानअंतरराष्ट्रीयस्तरपरकरनाहोताहै।वैश्विकपर्यावरणी यनीतियोंकोलागूकरनेकेलिएदेशोंकेबीचसहयोगजरूरीहोताहै।उदाहरणकेलिए, जलवायुपरिवर्तनपरपेरिससमझौतावैश्विकप्रयासोंकाप्रतीकहै।

उदाहरण:

- **भारतकाअंतरराष्ट्रीयपर्यावरण**: भारतकीविदेशनीतिपरअंतरराष्ट्रीयपर्यावरणकाबड़ाअसरपड़ताहै, जैसेभारतका**यूएनसुरक्षापरिषद**मेंस्थायीसदस्यताकामुद्दा, **भारत-चीनरिश्ते**, **भारत-उ.स. संबंध**, और**भारत-रूस**जैसेदेशोंकेसाथरणनीतिकसाझेदारी।साथही, भारतकीजलवायुनीतिऔरविकासशीलदेशोंकेसमूह (G77) केसाथउसकेरिश्तेभीमहत्वपूर्णहैं।

इसप्रकार, अंतरराष्ट्रीयपर्यावरणएकबहुतहीजटिलऔरविविधतापूर्णअवधारणाहै, जिसमेंविभिन्नवैश्विकताकतों, संघर्षों, सहयोगोंऔरसाझासमस्याओंकासमावेशहोताहै।यहपर्यावरणदेशोंकीविदेशनीति, अंतरराष्ट्रीयसंबंधोंऔरवैश्विकविकासकेलिएएकमहत्वपूर्णसंदर्भप्रदानकरताहै।**भारतऔरसंयुक्तराष्ट्र (India and United Nations)**केरिश्तेबहुतमहत्वपूर्णहैं, क्योंकिभारतएकप्रमुखसदस्यदेशकेरूपमेंसंयुक्तराष्ट्रकेविभिन्नअंगोंमेंसक्रियरूपसेभागलेताहै।संयुक्तराष्ट्र (United Nations - UN) एकअंतरराष्ट्रीयसंगठनहै, जिसकीस्थापना24 अक्टूबर1945 कोकीगईथी, औरइसकामुख्यउद्देश्यअंतरराष्ट्रीयशांतिऔरसुरक्षाबनाएरखना, देशोंकेबीचसहयोगबढ़ानाऔरमानवाधिकारोंकासंरक्षणकरनाहै।

भारतनेसंयुक्तराष्ट्रमेंअपनीसक्रियभूमिकानिभाईहैऔरकईमहत्वपूर्णमुद्दोंपरयोगदानदियाहै।आइएदेखें भारतऔरसंयुक्तराष्ट्रकेबीचरिश्तोंकेकुछप्रमुखपहलुओंको:

1. संयुक्तराष्ट्रमेंभारतकासदस्यता (India's Membership in the UN):

- भारतने1945 मेंसंयुक्तराष्ट्रकेसंस्थापकसदस्यकेरूपमेंशामिलहोनेकेबादसेसंगठनमेंसक्रियरूपसेभागलियाहै।भारतकोयूएनकासदस्यबननेमेंकोईबाधानहींथी, क्योंकियहस्वतंत्रताप्राप्तकरनेकेबादएकप्रमुखशक्तिकेरूपमेंउभराथा।
- भारतनेहमेशाअंतरराष्ट्रीयमामलोंमेंसंयुक्तराष्ट्रकेसिद्धांतोंऔरउद्देश्योंकेसमर्थनमेंअपनीस्थितिस्पष्टकीहै, विशेषरूपसेशांति, न्यायऔरसमावेशिताकेमामलेमें।

2. संयुक्तराष्ट्रसुरक्षापरिषद (UN Security Council):

- **भारतकासुरक्षापरिषदमेंस्थायीसदस्यताकामुद्दा**: भारतनेलंबेसमयसेसंयुक्तराष्ट्रसुरक्षापरिषदमेंएकस्थायीसदस्यताकीमांगकीहै।भारतकामाननाहैकिसुरक्षापरिषदमेंसुधारकीआवश्यकताहैताकियहअधिकप्रतिनिधि,

लोकतांत्रिकऔरन्यायसंगतबने।भारतविशेषरूपसेएशियाकेसबसेबड़ेलोकतंत्रऔरआर्थिकमहाशक्ति होनेकेकारणसुरक्षापरिषदमेंस्थायीसदस्यताकाहकदारमानताहै।

- **भारतकायोगदान**:
  भारतसंयुक्तराष्ट्रशांतिमिशनोंमेंभीसक्रियरूपसेशामिलरहाहैऔरसुरक्षापरिषदमेंकईबारचर्चामेंरहाहै , विशेषरूपसेआतंकवाद, सीमाविवादऔरशांतिस्थिरताकेमामलोंमें।

3. मानवाधिकारऔरविकास (Human Rights and Development):

- **भारतकामानवाधिकारोंकेप्रतिरुख**:
  भारतनेसंयुक्तराष्ट्रकेमानवाधिकारआयोगमेंअपनेयोगदानकेमाध्यमसेमानवाधिकारोंकेसंरक्षणके लिएहमेशाआवाजउठाईहै।भारतनेविशेषरूपसेसामाजिकऔरआर्थिकअधिकारों, गरीबीउन्मूलनऔरसमानताकेमुद्दोंपरजोरदियाहै।
- **संयुक्तराष्ट्रविकासकार्यक्रम (UNDP)**: भारत, संयुक्तराष्ट्रविकासकार्यक्रम (UNDP) कासक्रियसदस्यहै, जोविकासशीलदेशोंमेंगरीबीउन्मूलन, शिक्षा, स्वास्थ्यऔरपर्यावरणीयसंरक्षणजैसेमहत्वपूर्णक्षेत्रोंमेंकामकरताहै।भारतनेकईवैश्विकविकासल क्ष्योंकोपूराकरनेकेलिएसंयुक्तराष्ट्रकेसाथसाझेदारीकीहै।

4. संयुक्तराष्ट्रशांतिमिशन (UN Peacekeeping Missions):

- भारतनेसंयुक्तराष्ट्रशांतिमिशनोंमेंमहत्वपूर्णयोगदानदियाहैऔरयहविश्वमेंसबसेबड़ेशांतिसैनिकों (peacekeepers)
  कोभेजनेवालेदेशोंमेंसेएकहै।भारतीयसैनिकोंनेकईदेशोंमेंशांतिस्थापनाकेलिएकामकियाहै, जैसेकांगो, लाइबेरिया, श्रीलंका, औरदक्षिणीसूडान।
- भारतकायहयोगदानसंयुक्तराष्ट्रकेशांतिअभियानोंकेप्रतिइसकेमजबूतसमर्थनकोदर्शाताहै।

5. जलवायुपरिवर्तनऔरपर्यावरण (Climate Change and Environment):

- भारतनेजलवायुपरिवर्तनकेमुद्देपरसंयुक्तराष्ट्रकेफ्रेमवर्ककन्वेंशनऑनक्लाइमेटचेंज (UNFCCC) केतहतसक्रियरूपसेकामकियाहै।भारतनेपेरिसजलवायुसमझौते (Paris Climate Agreement) कासमर्थनकियाहैऔरइसनेजलवायुपरिवर्तनकेखिलाफवैश्विकसंघर्षमेंअपनेयोगदानकीप्रतिबद्धता जताईहै।
- भारतनेजलवायुपरिवर्तनकेप्रभावोंकोकमकरनेकेलिएऊर्जादक्षता, स्वच्छऊर्जाऔरस्थिरताकेक्षेत्रोंमेंकईपहलकीहैं।

6. संयुक्तराष्ट्रमहासभा (UN General Assembly):

- भारतनेसंयुक्तराष्ट्रमहासभामेंअपनेविचारोंकोप्रकटकियाहैऔरवैश्विकमुद्दोंपरअपनीस्थितिको स्पष्टकियाहै।भारतकाकहनाहैकिवैश्विकनिर्णयोंमेंविकासशीलदेशोंकोपर्याप्तप्रतिनिधित्वमिलना चाहिए।
- भारतनेहमेशामहासभाकेमंचसेवैश्विकआतंकवाद, गरीबी, शिक्षा, स्वास्थ्य, औरसामूहिकसुरक्षाजैसेमहत्वपूर्णमुद्दोंपरअपनीआवाजउठाईहै।

7. सामूहिकसुरक्षाऔरआतंकवाद (Collective Security and Terrorism):

- भारतनेसंयुक्तराष्ट्रमेंआतंकवादकेखिलाफकार्रवाईकीआवश्यकतापरजोरदियाहैऔरयहमानताहै किआतंकवादमानवताकेलिएसबसेबड़ाखतराहै।भारतनेसंयुक्तराष्ट्रमेंआतंकवादकेखिलाफएकव्या पकऔरसमग्रकानूनीढांचाबनानेकेलिएकईप्रस्तावदिएहैं।
- भारतनेहमेशाआतंकवादकेमुद्देपरसंयुक्तराष्ट्रसेअधिकसक्रियऔरप्रभावीकदमउठानेकीमांगकीहै।

8. भारतऔरसंयुक्तराष्ट्रकेसाथसाझेदारी (India's Partnership with the UN):

- भारतनेसंयुक्तराष्ट्रकेविभिन्नकार्यक्रमोंऔरएजेंसियोंकेसाथसहयोगकियाहै, जैसे**UNICEF**, **UNESCO**, **WHO**, और**FAO**आदि, ताकिवैश्विककल्याणऔरविकासमेंयोगदानकियाजासके।
- भारतनेसंयुक्तराष्ट्रकेएजेंसियोंकेमाध्यमसेशिक्षा, स्वास्थ्य, औरसततविकासजैसेमुद्दोंपरध्यानकेंद्रितकियाहै।

9. भारतकायोगदानऔरभूमिका:

- भारतनेसंयुक्तराष्ट्रकेविभिन्नहिस्सोंमेंअपनीभूमिकानिभाईहै, जैसे**UNHCR** (United Nations High Commissioner for Refugees), **UNEP** (United Nations Environment Programme), और**WHO** (World Health Organization) मेंयोगदानकियाहै।
- भारतनेवैश्विकस्तरपरगरीबदेशोंकेलिएविकासात्मकसहायता, खाद्यसुरक्षा, औरबुनियादीढांचेकेविकासकेलिएभीसमर्थनप्रदानकियाहै।